JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Uccha Madhyamik Vidhyalyo Me Addhyayn Ratt Vidhyarthiyo Ke Snkay Ke Aadhar Pr Samshya Smadhan Yogyta Tatha Nirnay Nirman Kshamta Ka Tulnatmak Adhyayan

संत लाल सर्वा
पी.एच.डी शोधार्थी
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय
बीकानेर

डॉ. मीनाक्षी मिश्रा
प्राचार्य
भारती शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान,
श्रीगंगानगर

सारांश

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य "'उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संकाय, लिंग व परिवेश के आधार पर समस्या समाधान योग्यता, तार्किक चिन्तन योग्यता तथा निर्णय निर्माण क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन" है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है तथा न्यादर्श के रूप में राजस्थान राज्य के श्रीगंगानगर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कुल 600 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है। प्रदतों के संकलन हेतु समस्या समाधान योग्यता मापनी–डॉ, रूपरेखा गर्ग, तार्किक चिंतन योग्यता मापनी–डॉ. सुरजीत कुमार व डॉ. शिखा तिवारी तथा निर्णय निर्माण मापनी (स्वयं निर्मित) को अपनाया गया। प्रदतों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ है कि श्रीगंगानगर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समस्या समाधान योग्यता, तार्किक चिंतन योग्यता तथा निर्णय निर्माण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

शोध सार

''उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संकाय के आधार पर समस्या समाधान योग्यता तथा निर्णय निर्माण क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।'

प्रस्तावना :–

एक राष्ट्र अथवा समाज के लिए मानव सबसे महत्वपूर्ण साधन है। कोई भी राष्ट्र उस समय ही उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है जबकि उसके अंदर प्रत्येक मानव को यह सुविधा प्राप्त हो कि वह स्वतंत्रतापूर्वक अपना विकास कर सके जितना कि उसमें विकास करने की क्षमता है। प्रत्येक व्यक्ति के अंदर निहित कुछ शक्तियाँ होती हैं। जब इन शक्तियों को फलने–फूलने के अवसर मिलते हैं तो उसका विकास उसकी क्षमता के अनुसार हो जाता है, किन्तु अगर ऐसा नहीं होता तो उसका पूर्ण विकास नहीं हो पाता।

व्यापक रूप में समस्त अनुभवों को शिक्षण कहा जा सकता है। एक मच्छर का काटना, एक तरबूज का स्वाद, प्रेम में पड़ने का अनुभव, वायुयान को उड़ाने का या तूफान में छोटी सी नोका के गिर जाने का सभी अनुभव हम पर प्रत्यक्ष

शैक्षिक प्रभाव डालते हैं। विद्यार्थियों की शिक्षा के चिन्तक और चिन्तनीय उपागम भारत के संदर्भ में बहुत से है। प्रश्न ये उठता है कि विद्यार्थियों की शिक्षा के संदर्भ में जो निर्णण लिये जाते है कि उन निर्णयों में विद्यार्थियों की भूमिका क्या है? विकास की दृष्टि से विद्यार्थियों को शिक्षा के रास्ते पर सभी देखना चाहते है लेकिन इन दिशा में उनकी स्वतंत्रता उनके निर्णयों एवं उनकी सोच को पूर्ण रूप से सामाजिक मान्यता नहीं मिल पायी हैं। विभिन्न सामाजिक व्यवहारों के अवलोकन से विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता सीमित तर्क एवं निर्णयों पर आश्रित परिदृश्य दिखाई देता है इस पृष्ठ भूमि से मेरे मानस पटल पर ये शोध प्रश्न उत्पन्न होते है कि समाज के विभिन्न वर्गो के विद्यार्थियों की शिक्षा में क्या दशा है। उनके पास अपने विचार व्यक्त करने एवं समस्या समाधान के संदर्भ में जानकारी लेने का स्तर

कैसा है ? उनकी समस्या समाधान में कोई अंतर पाया जाता है? क्या भारतीय समाज में उनके तार्किक चिन्तन में अंतर पाया जाता है ? क्या विद्यार्थी अपने विद्यालयी उपागमों से संतुष्ट है या नही ? विद्यार्थियों से समाज निर्णय क्षमता की अपेक्षा रखता है। इस पृष्ठभूमि में भी यह उत्कृष्ठा उत्पन्न होती है कि भारतीय समाज से संदर्भित विद्यार्थीयों में निर्णय क्षमता की प्रवृति कैसी है ? क्या विभिन्न वर्ग के विद्यार्थियों की निर्णय क्षमता में अंतर पाया जाता है ? इसी प्रकार क्या सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों में विद्यालयी समायोजन अधिक है अथवा नहीं ? इन सभी प्रश्नों की उलझनों की तलाश में शोधकर्ता ने उच्च माध्यमिक स्तर के विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता, तार्किक चिन्तन योग्यता तथा निर्णय निर्माण क्षमता का अध्ययन अनेक संदर्भों के अवलोकन पुनरावलोकन के बाद में रेखाकित किया गया। सामान्य तौर पर आज हम विद्यार्थियों के संदर्भों का अवलोकन करे तो स्पष्ट दिखाई देता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों की समस्या समाधान, तार्किक चिन्तन तथा निर्णय जैसे सरोकारों को कोई महत्व प्रदान नहीं करता है अर्थात् हमारे विद्यालयों में विद्यार्थियों से जुड़ाव नहीं के बराबर है। आज का विद्यार्थी विद्यालय आना ही नहीं चाहता है। विद्यालय बालकों को रोकने में असमर्थ है। विद्यार्थी से केवल आज्ञापालन की अपेक्षा ही की जाती है। कक्षाओं में विद्यार्थी द्वारा अध्यापकों से सवाल पूछते देखना आज दुर्लभ सा दिखाई देता है। उपर्युक्त सभी स्थितियां विद्यार्थियों के संदर्भ में ओर गम्भीर रूप लिये हुए हैं। अतः उक्त अध्ययन मील का पत्थर साबित हो सकता है तथा उक्त दिशा का कार्य स्वतः ही सार्थक है। सम्पूर्ण विवेचना का सार यह है कि विद्यार्थियों के शिक्षा के क्षेत्र में जो भी प्रयास किये जाये वह स्वतः ही सार्थक है। सम्पूर्ण विवेचना का सार यह है कि विद्यार्थियों के शिक्षा के क्षेत्र में जो भी प्रयास किये जाये वह स्वतः सार्थक है। उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन एक महत्वागामी उपागम है। अध्ययन में विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता तथा निर्णय निर्माण क्षमता का अध्ययन करना समाज को एक नई दिशा प्रदान करेगा। विभिन्न चरों के परिणामों से परिचित होकर विद्यार्थियों के माता–पिता सकारात्मक दिशा की तरफ आगे बढ़ सकेंगे। शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया में अपेक्षित सुधार कर उत्साहवर्धन में सहयोग प्रदान कर सकेंगे।

समस्या कथन –

''उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संकाय के आधार पर समस्या समाधान योग्यता तथा निर्णय निर्माण क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन ।'

उद्देश्य :–

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला व विज्ञान संकाय के विद्याथियों की समस्या समाधान योग्यता का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की निर्णय निर्माण क्षमता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :–

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला व विज्ञान संकाय के विद्याथियों की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की निर्णय निर्माण क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श –

प्रस्तुत शोघ कार्य में अनुसंधान के लिए जनसंख्या विभिन्न विधालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राएँ है जिनकी संख्या लाखों करोड़ो में है। इस सम्पूर्ण जनसंख्या पर शोध कार्य करना सम्भव नहीं हैं। अतः अध्ययन में धन, समय व साधनों की सीमित मात्रा के कारण शोधकर्ता ने अध्ययन हेतु अभिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए राजस्थान राज्य के श्रीगंगानगर जिले के क्षेत्रों के विद्यालयों से 600 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। जिसमें से 300 कला वर्ग व 300 विज्ञान वर्ग से सम्बन्धित है।

तकनीकी शब्दों की व्याख्या :–

उच्च माध्यमिक विद्यालय :–

ऐसे विद्यालय जिसमें कक्षा 11 व 12 के कला, विज्ञान और वाणिज्य के विद्यार्थी शामिल होते हैं। प्रस्तुत शोध में कला व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों को शामिल किया गया।

1. कला संकाय :–

संकाय से तात्पर्य विषयों के चुनाव से है जैसे कला संकाय में इतिहास, राजनीति विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र आदि विषय आते हैं।

2. विज्ञान संकाय :––

इसमें रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान आदि विषय शामिल किये जाते हैं।

परिवेश :–

इसके अन्तर्गत ग्रामीण व शहरी परिवेश को शामिल किया गया है।

समस्या समाधान योग्यता :–

दो या दो से अधिक सीखे गये प्रत्यय या अधिनियमों को एक उच्च स्तरीय अधिनियम के रूप में विकसित किया जाता है। उसे समस्या समाधान अधिगम कहते हैं।

निर्णय–निर्माण क्षमता :–

समस्या की गम्भीरता तथा वर्गीकरण के बाद उक्त समस्या के समाधान के लिए आवश्यक समाधानों की सूची तैयार की जाती हैं तथा प्रत्येक समाधान की आवश्यकता के संदर्भ में मूल्यांकन किया जाता है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण –

अनुसंधान कर्ता ने निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से दत्त संकलन हेतु किया गया।

1. समस्या समाधान योग्यता परीक्षण हेतु – डॉ. रूप रेखा गर्ग।
2. निर्णय निर्माण योग्यता परीक्षण हेतु – स्वयं निर्मित।

परिकल्पना – 1

1. **उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

क्र.स.	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	परिकल्पना	
1	विज्ञान	300	17.73	1.87	5.86	.05	.01
2.	कला	300	16.88	1.69		अस्वीकृत	अस्वीकृत

(df=N_1+N_2-2=300+300-2=598)

उपरोक्त परिकल्पना संख्या 1 में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता सम्बन्धी आंकड़ों को विश्लेषित किया गया है। जिसमें 300 विज्ञान संकाय 300 कला संकाय के विद्यार्थियों से, सम्बन्धित प्रश्नावली को भरवाया गया तथा प्राप्त आंकड़ों को विश्लेषित किया गया जिसमें ज्ञात हुआ है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों का मध्यमान 17.73 व कला संकाय के विद्यार्थियों का मध्यमान 16.88 प्राप्त हुआ तथा इनके मानक विचलन क्रमश 1.87 व 1.69 प्राप्त हुए। इसके आधार पर इनका टी–मूल्य करने पर यह 5.86 प्राप्त हुआ जो कि स्वातन्त्रय के अंश 598 के विश्वास के स्तर 0.05 पर प्राप्त मान 1.98 से अधिक तथा विश्वास के स्तर 0.01 पर प्राप्त मान 2.59 से भी अधिक है। अत दोनों ही सारणीमान गणनाकृत मान से कम है। अतः शोधकर्त्ता द्वारा निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है अर्थात् उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों में अध्ययनरत कला व संकाय के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अन्तर पाया गया।

परिकल्पना – 2

2. **उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की निर्णय निर्माण क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

क्र.स.	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	परिकल्पना	
1	विज्ञान	300	37.39	2.68	4.76	.05	.01
2.	कला	300	36.39	2.54		अस्वीकृत	अस्वीकृत

(df=N_1+N_2-2=300+300-2=598)

उपरोक्त परिकल्पना संख्या 2 में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की निर्णय निर्माण क्षमता सम्बन्धी आंकड़ों को विश्लेषित किया गया है। जिसमें 300 विज्ञान संकाय 300 कला संकाय के विद्यार्थियों से सम्बन्धित प्रश्नावली को भरवाया गया तथा प्राप्त आंकड़ों को विश्लेषित किया गया जिसमें ज्ञात हुआ है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों का मध्यमान 37.39 व कला संकाय के विद्यार्थियों का मध्यमान 36.39 प्राप्त हुआ तथा इनके मानक विचलन क्रमश 2.68 व 2.54 प्राप्त हुए। इसके आधार पर इनका टी–मूल्य ज्ञात करने पर यह 4.76 प्राप्त हुआ जो कि स्वातन्त्रय के अंश 598 के विश्वास स्तर 0.05 पर प्राप्त मान 1.96 से अधिक तथा विश्वास के स्तर 0.01 पर प्राप्त मान 2.59 से भी अधिक। अत दोनों ही सारणीमान गणनाकृत मान से कम है। अत शोधकर्त्ता द्वारा निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है अर्थात् उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों में अध्ययनरत कला व संकाय के विद्यार्थियों की निर्णय निर्माण क्षमता में सार्थक अन्तर पाया गया।

प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों के आधार पर इसका शैक्षिक उपयोग निम्नानुसार है –

1. प्रस्तुत शोध कार्य के निष्कर्षों से लाभ उठाकर शिक्षक कक्षा में ऐसा वातावरण प्रदान कर सकेगें जिससे विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता तथा निर्णय लेने की क्षमता का विकास हो सकेगा।
2. प्रस्तुत शोध कार्य के प्राप्त निष्कर्षों से शिक्षक कक्षा में एक रचनात्मक वातावरण प्रदान कर सकेगें। जिससे विद्यार्थी समस्या समाधान व निर्णय लेने सम्बधि योग्यताओं का समाज में उपयोग कर सकेगे।
3. संस्था प्रधान प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर संस्था में ऐसा वातावरण प्रदान कर सकेंगे। जिससे विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से तार्किक निर्णय ले सकेगें तथा छोटी–छोटी समस्याओं को स्वयं हल कर सकेगे।

भावी शोध हेतु सुझाव –

1. भावी शोध हेतु माध्यमिक विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को भी न्यादर्श के रूप में लिया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध 600 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है। भावी शोध में न्यादर्श के रूप में और अधिक विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध में हिन्दी माध्यम के विद्यालयों को लिया गया है, इसमें अंग्रेजी माध्यम तथा संस्कृत विद्यालयों को शामिल किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. डॉ. एस.एस. माथुर – शिक्षा मनोविज्ञान पृष्ठ सं. 390, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. डॉ. पी.डी. पाठक – शिक्षा मनोविज्ञान पृष्ठ सं. 341, अग्रवाल पब्लिकेशन, जयपुर।
3. भाई योगेन्द्रजीत– शिक्षा मनोविज्ञान पृष्ठ सं. 206, अग्रवाल पब्लिकेशन, जयपुर।
4. डॉ. नरेन्द्र बैंस/संजयदत्ता – अधिगम का मनो सामाजिक आधार पृष्ठ सं. 19.1, जैन प्रकाश मंदिर, जयपुर।
5. डॉ. डी.एन. श्रीवास्तव – सांख्यिकीय एवं मापन, अग्रवाल पब्लिकेशन, जयपुर।
6. डॉ. डी.एन. श्रीवास्तव सांख्यिकी एवं मापन अग्रवाल पब्लिकेशन जयपुर।
7. डॉ. आर.पी. भटनाकर एवं डॉ. मिनाश्री भटनागर शिक्षा अनुसंधान लॉयल बुक डिपो।